# प्रथम अध्याय

# प्रस्तावना

# अध्याय–प्रथम

## प्रस्तावना

### 1.1 भूमिका–

यह सुपरिचित तथ्य है कि आज समाज की लगभग हर समस्याओं की बुनियाद में शिक्षा को ही जिम्मेदार माना जाता है। अतिश्योक्ति होने के बावजूद यह एक बड़ा कटु सत्य है। तथापित समाज अपने विकास अपनी प्रोन्नति, अपनी समस्याओं को समझने व समाधान के लिए शिक्षा की ओर ही उन्मुख होता है अतः आवश्यक है कि इसकी प्रकृति को समझा जाए।

शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है शिक्षा वह साधन है जो किसी उद्देश्य के अनुसार समाज के आदर्शों, मूल्यों एवं आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए बालक की मूल प्रवृत्तियों का विकास इस प्रकार करती है कि व्यक्ति और समाज दोनों ही विकसित होते रहें। इस तरह शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है।

**गांधीजी** ने भी इस बात को अपने शब्दों में स्वीकारा है–

**"शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुँमुखी विकास करना है।"**

शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया द्वारा छात्रों में वांछित व्यक्तित्व के गुणों का विकास किया जाता है। इन गुणों का क्रमिक विकास एवं मात्रा का समय–समय पर मूल्यांकन भविष्य की गतिविधियों को निश्चित दिशा प्रदान करता है।

बालक जब इस संसार में आता तभी से बालक में कुछ विशेष रूचियों के दर्शन होने लगते हैं जैसे कई बालक संगीत सुनते ही रोना बंद कर देते हैं, तो कई लोरी सुनते तथा कई टेलीविजन के सामने आते ही खुश हो जाते हैं। खाने-पीने के संबंध में भी उनकी रूचि अलग-अलग होती है। किसी बालक को मीठा ज्यादा अच्छा लगता है तो कई को कम, कुछ समय बाद उनके खेलों से भी हम उनकी रूचि को जान सकते हैं। बच्चे लगभग वही खिलौने लेना चाहते या खेलते है जो वो भविष्य में बनना चाहते हैं। जैसे कोई पुलिस बनना चाहेगा तो वह बंदूक लेकर खेलता है कुछ बालक खेल में डॉक्टर या टीचर बनना पसंद करते हैं। हाँ उनके खेलों में भी वह बालक जो डॉक्टर बनता है हमेशा डॉक्टर ही बनना चाहेगा।

कुछ समय पश्चात् जब बच्चे विद्यालय जाने लगते हैं उनमें विभिन्न विषयों के प्रति उनकी रूचि स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इसमें लड़कों व लड़कियों की रूचि में भी अंतर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अधिकतर लड़कियाँ कला या साहित्य की ओर अधिक आकृष्ट रहती हैं तो लड़के तकनीकी में अधिक रूचि लेते हैं। कई विद्यार्थियों की रूचि गणित में होती है, कई की विज्ञान में, कुछ विद्यार्थियों को हिन्दी की कविता गाना अच्छा लगता है तो कई बच्चे इन सभी विषयों से दूर भागते हैं, उन्हें सिर्फ खेलना ही अच्छा लगता है।

माध्यमिक स्तर की बात करें तो विषयों का दायरा और बढ़ जाता है, अब उनके सामने हिन्दी, गणित, विज्ञान के अलावा अंग्रेजी, संस्कृत व सामाजिक अध्ययन सामने आते हैं। अब विद्यार्थियों की रूचि किसी एक या दो विषयों में उभरकर सामने आने लगती है।

प्राचीनकाल में गणित, भाषा व भौतिकी विषय पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था क्योंकि उनका व्यावसायिक महत्व था। आगे चलकर भूगोल. इतिहास व नागरिकता को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाने लगा। इससे पूर्व शिक्षाविदों का ध्यान इस ओर नहीं गया था। आज इस विषय की आवश्यकता पर बल दिया जाने लगा है, फिर भी आज के छात्रों में इस विषय के प्रति पर्याप्त रूचि का अभाव देखने को मिलता है जो अप्रत्याशित रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

सामाजिक अध्ययन विषय में प्रारंभिक स्तर पर भूगोल, इतिहास व नागरिक शास्त्र का समावेश किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में विषय के तथ्य सिद्धान्त, ऐतिहासिक व वर्षा रेखाचित्रों में भ्रम उत्पन्न होता है। अतः विद्यार्थियों की उपलब्धि न्यूनतम रह जाती है। शोधकर्ता ने महसूस किया कि इस संबंध में अध्ययन कर कारणों का पता लगाया जा सकता है, ताकि कारकों को दूर कर इस विषय को और अधिक रूचिकर बनाया जा सके।

स्वतंत्रता पूर्व सामाजिक अध्ययन विषय का अध्ययन नहीं किया जाता था क्योंकि उस प्राचीन काल की शिक्षा का उद्देश्य केवल अंग्रेजी महकमों के लिए क्लर्क बनाना था। अतः लोगों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन से दूर रखा जाता था। केवल भाषा, गणित एवं भौतिक विज्ञान की शिक्षा पर जोर दिया जाता था, क्योंकि सामाजिक अध्ययन का व्यावसायिक महत्व नहीं था। आगे चलकर अर्थात् स्वतंत्रता पश्चात् कई क्रांतिकारी परिवर्तन हुए इन्हीं कारणों से सामाजिक अध्ययन विषय के अध्ययन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। अतः सामाजिक अध्ययन

के तहत भूगोल, इतिहास व नागरिक शास्त्र को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

## 1.2 सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य

हमें विश्व की, नागरिकता का पाठ पढ़ाना एक सभ्य सुसंस्कृत समाज के निर्माण हेतु विद्यार्थियों का सर्वांगिण विकास करना, विश्व बंधुत्व व राष्ट्रीयता की भावना का विकास सामाजिक अध्ययन के बिना मात्र कोरी कल्पना है।

**फेयर ग्रीव** महोदय के अनुसार "सामाजिक अध्ययन शिक्षण के मुख्य उद्देश्य हैः-

1. ऐसे भविष्य के नागरिकों का निर्माण जो राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं पर निष्पक्ष होकर निर्णय ले सकें।
2. विषय रूपी रंगमंच की सही (वास्तविक) कल्पना कर सकें।

### 1.2.1 सामाजिक अध्ययन विषय के प्रमुख भाग –

सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत भूगोल में धरातलीय भू-भाग भूरचना, स्थलाकृति, अपवाहतंत्र, जलवायु, वनस्पतियाँ, मिट्टी, वर्षा, जनसंख्या, उद्योग-धंधो, कृषि व फसलें इत्यादि का अध्ययन शामिल है।

इतिहास में प्राचीन व आधुनिक इतिहास मध्ययुगीन भारत, वैदिक कालीन विभिन्न युगों का संक्षिप्त विवरण होता है।

पंचवर्षीय योजनाओं, संविधान के अध्ययन को नागरिक शास्त्र में जगह दी जाती है। इससे योग्य सभ्य सुसंस्कृत नागरिकों का निर्माण होता है, जिनमें राष्ट्रीयता व अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान होती है। सामाजिक अध्ययन विषय यहीं तक सीमित नहीं रह जाता बल्कि मानव

का सर्वांगीण विकास करता है। सामाजिक अध्ययन व्यक्ति की सामाजिक संपूर्ण प्रक्रियाओं का विषय क्षेत्र है। सामाजिक अध्ययन को ज्ञान प्राप्ति हेतु निम्न भागों में विभाजित करके अध्ययन किया जाता है।

(1) **इतिहास** – इतिहास सामाजिक जीवन का एक आवश्यक अंग है। समाज की रचना में इसका महत्वपूर्ण योगदान है इसका जन्म मनुष्य के पृथ्वी पर प्रादुर्भाव के समय से ही माना जाता है भारतीय पंरपरा के अनुसार इतिहास अंग्रेजी के History शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ होता है "क्या घटित हुआ है?" अर्थात् सार्वजनिक घटनाओं का एक क्रमबद्ध लेखा प्रस्तुत करना। "A Chronological Record of event is History" इसके साथ ही इतिहास के द्वारा मानव सभ्यता के क्रमबद्ध विकास का दिग्दर्शन होता है।

(2) **नागरिक शास्त्र**– व्यापक शिक्षा के बिना हम राजनीतिक लोकतंत्र नहीं प्राप्त कर सकते। पश्चिमी देशों में आर्थिक क्रांति ने वह आधार बनाया जिसके फलस्वरूप शिक्षा का अच्छी तरह प्रसार हुआ और उसके बाद वहाँ पूर्ण लोकतंत्र आया। लेकिन एशिया के अधिकतर देशों में और भारत में निश्चित रूप से राजनीतिक दृष्टि से जागरूक मतदाताओं की जरूरतों को पूरा करने के साधनों के बिना ही एक छलांग में पूर्ण लोकतंत्र पर जा पहुँचे।

**पं. जवाहर लाल नेहरू** तथा **मूर्ति वैंकट रमैया** के शब्दों में – सचे अर्थ में लोकतंत्र नागरिकों को प्रभावी भागीदारी के बिना संभव नहीं। इस सहभागिता की सुविधा के लिए कुछ स्थितियों का निर्माण करना होता है। एक स्वस्थ लोकतांत्रिक

व्यवस्था की तीन बुनियादी आवश्यताएं है– **''नागरिकों को नागरिकता संबंधी शिक्षा नेतृत्व का प्रशिक्षण और उनमें नैतिक गुणों और मूल्यों का विकास करना।''**

**''सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय''** (सब लोगों के लिए हित व सब लोगों के लिए सुख) अन्य शब्दों में सामूहिक हित अथवा सुख ही इस कल्याणकारी राज्य का मूल मंत्र है।

नागरिक शास्त्र ही एक ऐसा विषय है जो इन उद्देश्यों की पूर्ति करता है। अतः नागरिक शास्त्र का अध्ययन अनिवार्य व अपरिहार्य है। हम इसकी आवश्यकता को कभी भी नकार नहीं सकते। आज विश्व को अनेक देशों के समूह की तरह नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को एक देश की तरह माना जो लगा है। अतः आज आवश्यक है कि विश्वबंधुत्व व भाईचारा का पाठ पढ़ाने वाले इस विषय पर और जोर दिया जाए। नागरिक शास्त्र संघर्ष, कलह एवं सामाजिक विषमभव को दूर करने की कला है। नागरिक शास्त्र वह विज्ञान है जो मनुष्यों को आपस में स्नेह, सहयोग एवं सौहाद्र से जीवनयापन करने की शिक्षा देता है। अतः नागरिक शास्त्र को शांति शास्त्र एवं सुखमय जीवन की आचार सहिंता कहते हैं। वस्तुतः नागरिक शास्त्र सफल सामाजिक की गीता, बाइबिल या कुरान है। जो निम्न उद्देश्यों की पूर्ति करता है :–

(i) उत्तम नागरिकता का विकास।

(ii) सामाजिक भावनाओं का विकास।

(iii) सामाजिक समस्याओं का ज्ञान तथा निराकरण।

(iv) बालकों में विभिन्न वृत्तियों तथा कलाओं का विकास।

(v) विश्व बंधुत्व अंतराष्ट्रीयता की भावना का विकास।

(3) **भूगोल** – यह विषय हमें संपूर्ण विश्व की जलवायु वनस्पति, वातावरण एवं रहन–सहन आदि की विस्तृत जानकारी देता है। यही हमें दूसरे राष्ट्रों की सामाजिक आर्थिक नीतियों व जीवन को समझने का अवसर प्रदान करता है।

**ब्रून्स** के अनुसार **''भूगोल मनुष्य और प्रकृति के मध्य में होने वाली क्रिया तथा प्रतिक्रिया है।**

**फिन्च** और **ट्रिवार्पा**– **''भूगोल पृथ्वी के धरातल का विज्ञान है। यह पृथ्वी पर विभिन्न वस्तुओं के वितरण के कारणों तथा विभिन्न वस्तुओं के प्रादेशिक जमाव का वर्णन करता है।''**

**फेयर ग्रीव** महोदय की परिभाषा कुछ व्यापक है इसमें दो बातें मुख्य रूप से है:–

1. ऐसे भविष्य के नागरिकों को तैयार करना जो राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं पर निष्पक्ष होकर निर्णय ले सकें।
2. विश्व रूपी रंगमंच की सही (वास्तविक) कल्पना कर सकें।

भूगोल की उत्पत्ति का विकास मानव चिंतन से प्रारंभ किया गया तथा अपने परिवेश को मानव ने समझा उसी समय से भूगोल विषय का प्रदुर्भाव हुआ।

लेकिन इस विषय को स्थापित करने का श्रेय एवं जनक होने का गौरव यूनानी विद्वान इराटास्थानिक को जाता है। भूगोल शब्द हिन्दी के दो शब्द भू–गोल से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य है **''पृथ्वी के स्वरूप**

**का अध्ययन करना''** जो पृथ्वी के एक विशिष्ट गुण एवं पृथ्वी के वर्णन से संबंधित है। लेकिन मानव सभ्यता के विकास एवं मानवीय चिंतन के कारण भूगोल विषय के अध्ययन में व्यापकता आयी।

इन सब बातों का आशय यह है कि भूगोल वह विज्ञान है जो स्थानीय दशाओं और स्थिति का प्रभाव मानव पर बताता है। आधुनिक भूगोल का आधार जर्मन, फ्रांसिसी, ब्रिटिश व अमरीकी विचारधाओं का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। भूगोल शिक्षण निम्न उद्देश्यों की पूर्ति करता है :-

1. संपूर्ण विश्व की संस्कृतियों की जानकारी देकर विश्व बंधुत्व की भावना का विकास करता है।
2. भूगोल में हम विश्व की सभी जाति-प्रजाति व उनकी खूबियों को जानते हैं जो हममें समानता की भावना को जागृत करता है।

सामाजिक अध्ययन विषय के प्रारंभ के लिए विश्व संयुक्त राज्य अमेरिका का ऋणी है। प्रारंभ में सामाजिक अध्ययन विषयों के उस समूह को कहा जाता था जिसमें इतिहास, अर्थशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र सम्मिलित किया जाता था। यह नाम **''सामाजिक अध्ययन''** इसे 1892 में दिया गया। बाद में इसमें समाज शास्त्र विषय और जोड़ा गया परन्तु सामाजिक अध्ययन के इस स्वरूप को 1916 तक सरकार की मान्यता प्राप्त नहीं हुई। बाद में इसे एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्वीकार किया गया।

सामाजिक अध्ययन की निम्न परिभाषा वर्तमान में स्वीकार्य है :-

1. **जॉन यू माइकेलस** – ''सामाजिक अध्ययन मानव तथा उसके द्वारा अतीत, वर्तमान तथा उदीयमान भविष्य में अपने सामाजिक तथा भौतिक पर्यावरण के प्रति की गई प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है।''

"The Social studies is defined as the study of man and his interaction with his social and physical."

2. **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद** – ''सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा सामाजिक एवं भौतिक पर्यावरणों के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है।'' Social studies is concerned with people and their interaction with social and physical Environment."

NCERT Pamphlet Teaching Social studies.

3. **शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोश** – ''सामाजिक अध्ययन वह अध्ययन है जो मानव जीवन के रहन–सहन के ढंगों, मूलभूत आवश्यकताओं, पूर्ति के लिए संलग्न रहता है तथा संस्थाओं, जिनका उसने विकास किया है, का ज्ञान प्रदान करता है।''

जहाँ तक हम छात्रों की रूचि की बात करें तो विद्यार्थियों की रूचि के बिना कभी भी संबंधित विषय में उचित परिणाम अपेक्षित नहीं है। अतः हमें विद्यार्थियों की रूचि का महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए।

## 1.3 अध्ययन की आवश्यकता –

''वर्तमान काल व्यवसायिक प्रबंधन का है यदि हम समय के अनुसार नहीं चलते तो दुनियाँ से पिछड़ जाते हैं। अतः आज का युवा वर्ग प्रबंधन के पीछे भाग रहा है, क्योंकि यह एक ऐसा विषय है जिसने व्यक्ति को अपार धन दिया है जिसकी वजह से व्यक्ति के सम्मान व

सामाजिक स्थति में अनेक बदलाव आये हैं ऐसे में सामाजिक अध्ययन का स्थान अनिवार्य होते हुए भी यह व्यावसायिक दृष्टि से पिछड़ रहा है।

विद्यार्थियों को समाज में होने वाली गतिविधियों व सामाजिक जीवन की शिक्षा देना अनिवार्य है, और साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तक रूचिकर हो जिससे छात्र इसे रूचिपूर्ण ढ़ंग से पढ़ सके व समाज में अपनी स्पष्ट, आदर्श व आवश्यक उत्तरदायित्व निभा सके। आज के विद्यार्थियों में सामाजिक अध्ययन में रूचि कम होती जा रही है। अतः इस अध्ययन की आवश्यकता पड़ी जिसे हमने निम्न शीर्षक प्रदान किया है।

## 1.4 समस्या कथन –

"विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में रूचि व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।"

## 1.5 शब्द स्पष्टीकरण –

प्रस्तुत शोध में जिन शब्दों का प्रयोग हुआ है उन शब्दों का स्पष्टीकरण निम्नानुसार है–

### 1.5.1 विद्यार्थी :–

यहाँ विद्यार्थियों शब्द से आशय ग्रामीण व शहरी छात्र व छात्राएं जो कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् है। चाहे किसी भी भाषा समूह जाति व धर्म से संबंद्ध हों चाहे वो किसी भी आर्थिक सामाजिक परिस्थिति समूह का प्रतिनिधित्व करते हों ।

### 1.5.2 सामाजिक अध्ययन :–

शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोश के अनुसार – ''सामाजिक अध्ययन वह अध्ययन है जो मानव जीवन के रहन–सहन के ढंगों, मूलभूत आवश्यकताओं, क्रियाओं जिनमें मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संलग्न रहता है। तथा संस्थाओं, जिनका उसने विकास किया है, का ज्ञान प्रदान करता है।''

सामाजिक अध्ययन एक बहुत व्यापक विषय है, पर यहाँ सिर्फ वहीं विषय चर्चा, में है जो विद्यालय में पाठ्य पुस्तक के रूप में शामिल है, यहाँ हम सिर्फ उसी विषय की चर्चा करेंगे, या उसे ही अध्ययन में शामिल किया गया है जो कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की दृष्टि से सामाजिक अध्ययन है।

### 1.5.3 रूचि–

Interest की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द Interesse से हुई है। स्काउट के अनुसार इसके कारण अंतर होता है।''

**रॉस** के अनुसार – इस शब्द का अर्थ है– ''यह महत्वपूर्ण होती है।'' या इसमें लगाव होता है।

1. **भाटिया** – **''रूचि का अर्थ है**– अंतर करना। हमें वस्तुओं में इसलिए रूचि होती है, क्योंकि हमारे लिए उनमें और दूसरी वस्तुओं में अंतर होता है, क्योंकि उनका हमसे संबंध होता है।

   "Interest means making a difference. We are interested in objects because they make a difference to us because they concern us" Bhatia (130)

**क्रो एवं क्रो** – "रूचि वह प्रेरक शक्ति है, जो हमें किसी व्यक्ति वस्तु या क्रिया के प्रति ध्यान देने के लिये प्रेरित करती हैं।"

"Interest may reffer to the motivating force that Impels us to attend to a person. a thing or an activity"

Crow & Crow (P. 248)

**1.5.4 शैक्षिक उपलिब्धि** :– शैक्षिक उपलब्धि से आशय विद्यार्थियों के विगत वर्ष के सामाजिक अध्ययन में प्राप्तांको से है।

## 1.6 बालकों में रूचि उत्पन्न करने के कारण –

बालकों को लगातार पढ़ाया जाना या मौखिक ढ़ंग से पढ़ाया पाठ्य वस्तु के अरूचिकर बनाता है। अतः निम्न बातों में ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है।

1. **ज्ञात से अज्ञात** (Knoun to unknown) का संबंध जोड़कर विद्यार्थियों की रूचि को बरकरार रखना चाहिए।
2. **भाटिया** (Bhatia) आयु के अनुसार होता रहता है, अतः शिक्षक को उनकी रूचि के अनुसार पाठ्य विषय का आयोजन करना चाहिए।
3. **झा** (Jha) बालकों को अपनी मूल प्रवृत्तियों अभिवृत्तियों आदि से संबंधित वस्तुओं में रूचि होती है। अतः शिक्षक को उनकी रूचि के अनुकूल चित्रों स्थूल पदार्थों आदि का प्रयोग करना चाहिए।

इन्हीं सब बातों से प्रेरित यहाँ छात्रों की रूचि को सामाजिक अध्ययन में देखा गया है अर्थात् छात्र सामाजिक

अध्ययन में कितनी रूचि लेते हैं या वे इसमें क्या बदलाव चाहते हैं।

## 1.7 शोध के उद्देश्य (Objective)

1. सामाजिक अध्ययन में छात्र–छात्राओं की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सामाजिक अध्ययन में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान में उपलब्धि के माध्य अंकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की रूचि व शैक्षिक उपलब्धि के आपसी संबंधों का अध्ययन करना।

## 1.8 अध्ययन में प्रयुक्त चर :–

### आश्रित चर –

1. विद्यार्थियों की रूचि।
2. शैक्षिक उपलब्धि

### स्वतंत्र चर –

1. लिंग – बालक/बालिका
2. क्षेत्र ग्रामीण/शहरी

## 1.9 शोध की परिकल्पनाएँ–

1. सामाजिक विज्ञान में छात्र व छात्राओं की रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सामाजिक विज्ञान को छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक विज्ञान की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में रूचि व विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

## 1.10 शोध की सीमाएँ –

1. यह अध्ययन छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले से प्राप्त न्यादर्श पर आधारित है।
2. इसमें सिर्फ कक्षा 8वीं के 200 विद्यार्थियों के अध्ययन पर आधारित है।
3. शोध के लिए केवल राज्य शासित शासकीय विद्यालयों को चुना गया है।
3. यह अध्ययन केवल भोपाल जिले के संदर्भ में होगा।